रात्रिक्लास 8-6-68 ओमशान्ति बाप और वरसा याद है?

प्रदर्शनी का समाचार जोजिस पार्टी को समझाते हैं बाबा को बताने से बाबा फिर राय देंगे ऐसे2 भी समझाना चाहिए। पहले2 बाप का पूरा परिचय देना है। अलफ न समझा तो ब ब प्रु फालतू है। यह पक्का समझना। दिल होती है आगेसमझाने परन्तु बाबा कहते हैपहले2 अलफ। बेहद का बाप बेहद का वरसा देने वाला है। यह राजयोग सिखाया था। अभी फिर सिखाये रहे हैं। कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो सभी पाप भस्म हो जावेंगे। यह योग अग्नि है। उन से ही तुम पवित्र बन जावेंगे। कहते भी है पतित पावन आओ। यह है सारीपतित दुनिया। मनुष्य सभी पतित हैं। बोलने में हर्जा नहीं है। पतित से फिर पावन बनना है। यह परिचय तो जरूर देना है। और संग तोड़ एक संग जोड़ना है। अपन को आत्मा समझ। अपन को रूह समझ यह नालेज लेते हैं। देह अभिमानी कुछ समझ नहीं सकते हैं। यह है शिव बाबा का बेहद का भण्डारा। शिव बाबा तो खाते-पीते नहीं हैं। उनको सर्विस के लिए ही बुलाया है। तो तो सर्विस कर रहे हैं। बाप बच्चों को सर्विस करते देख कितना खुश होता है। ड्रामा बड़ा वन्डरफुल फर्स्ट क्लास बना हुआ है। नाम ही है ज्ञान भक्ति। दिन रात, सुख दुःख। बाप आकर बच्चों को अच्छी रीत समझाते हैं। बाप हीदुनिया को बदलेंगे। यह भी तुम जानते हो भक्ति मार्ग के गुरुओं की तो बादशाही है। इनकी अभी पिछाड़ी है। बहुत समझते हैं यह सन्यासी क्या करते हैं। भारत की सेवा तो करते ही नहीं हैं। भ्रष्टाचारी श्रेष्टाचारी बना कैसे सकेंगे। परन्तु वह समझते हैं सन्यासी श्रेष्ठाचारी हैं। परन्तु तुम समझाते हो वह भी भ्रष्टाचारी है। श्रेष्ठाचारी तो ल0ना0 है। इन्हों की महिमा ही ऊंची है। सन्यासियों का पार्ट तो पीछे का है। निवृति मार्ग का। रात दिन का फर्क है। परन्तु मनुष्यों की बुधि परऐसी ही जंक चढ़ी हुई है। जो कुछ भी समझते नहीं हैं। जो याद से जंक को निकालते हैं वह नई दुनिया का मालिक बन जाते हैं। किचड़ा आग में जलाया जाता है ना। यह भी सारी दुनिया को आग लगनी है। भंभोर को आग लगनी है। सीढ़ी का चित्र मुख्य है। किसको भी समझा करदेंगे तो झट लेंगे। यह तो बाबा समझते हैं यहां जो बैठे हैं स्वदर्शनचक्रधारी तो है ही। बाबा की याद आने से दैवीगुण भी धारण करनी है। शिव बाबा स्वर्ग रचते हैं। स्वर्ग में होते ही है सर्व गुण सम्पन्न। अलफ को याद करने से बादशाही मिलती है। देवतायें हैं ही सर्व गुण सम्पन्न... यहां है हिंसा वहां है अहिंसा। बड़ी ते बड़ी हिंसा है काम कटारी चलाना। बाप कहते हैं इन पर विजय पाई तो यह बनेंगे। गैरन्टी है। दैवी गुण जरूर आवेंगे। पत्थर बुधि है ना। आगे चल कर इन्हों की हड्डियां भी नरम होंगी। सतोप्रधान देवताओं को, तमोप्रधान असुरों को कहा जाता है बाप से वर्सा लेना बहुत सहज है। तो हम भी वरसे के हकदार बन जावेंगे। दैवी गुण भी धारण करनी है। बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए।

रात्रिक्लास-10-6-68 :- जो बाप को याद करते हैं उनके लिए खुशी ही बस है। खुशी में नींद नहीं आती है। क्योंकि कमाई होता है। खुशी है धन में। तुम बच्चों को खुशी है यह। आगे तुम थे देहअभिमानी। अभी तो हो देहीअभिमानी। देवतायें नई दुनिया में थे। अभी नहीं हैं। इन देवताओं को देवता किसने बनाया। फिर वह कहां गये। किसको भी पता नहीं है। बाप कहते हैं मैं आता हूं। बाप बिगर कोई समझा न सके। वह है टीचर। इन आंखों से देखने में नहीं आता। समझा जाता है। अपने आत्मा को ही नहीं देखा है तो बाप को कैसे देखेंगे। तुम भी समझते हो भक्ति मनुष्य मनुष्य सिखलाते हैं। वह है शास्त्रों की पढ़ाई। बाप कहते हैं यह सभी है भक्ति मार्ग। इन से मनुष्य सदगति को नहीं पाते। सदगति ज्ञान से होती है। बाकी भक्ति से दुर्गति को पाते हैं। बाप नालेज फुल है। बच्चों से ही बात करते हैं। आत्मा ही सभी कुछ करती है। संस्कार आत्मा ही ले जाती है। शिव बाबा ज्ञान का सागर है तो ज्ञान कैसे दे। ज्ञान से ही समझते हैं हमको ज्ञान सागर पढ़ाते हैं। सभी आत्मायें कहती है हे परमपिता परमात्मा हमारे दुःख हरो। शरीरद्वारा पुकारती है। वह कोई सुनते नहीं है। सुनते जब शरीर में है। ऐसे नहीं ईश्वर सभीकुछ जानते हैं। बड़ी समझने की बातें हैं। अच्छाबच्चों कोगुडनाईट।

*::***::*